This question paper contains 3 printed pages. Roll No. . . . . .

1102-I-A

Hindi Lit.-I

B.A. (Part-I) EXAMINATION - 2022
(For Non-Collegiate Candidates)
(Faculty of Arts)
(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

HINDI LITERATURE - I
प्रथम प्रश्न-पत्र
(आदिकाल और भक्तिकाल)

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 100

(i) प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

(ii) किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अत: परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **9x4=36**

(क) ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ। **9**

जोबन चाँपउ मउरियउ, कळी न चुट्टइ आइ।।

ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ।

कण पाकउ, करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ।।

अथवा

सुन रसिया, अब न बजाऊ बिपिन बाँसिया।

बार बार चरनारविंद गहि, सदा रहब बनि दसिया।

कि छलहुँ कि होएब के जाने, वृथा होएत कुल हँसिया।

अनुभव ऐसन मदन-भुजंगम हृदय मोर गेल डसिया।

नंद-नंदन तुअ सरन न त्यागब बलु जग होए दुरजसिया।

विद्यापति कह सुनु बनितामनि तोर मुख जीतल ससिआ।

धन्य धन्य तोर भाग गोआरिनि, हरि भजु हृदय हुलसिआ।

(ख) पंडित बाद बंदते झूठा। 9

राम कह्याँ दुनियाँ गति पावै, षाँड कह्याँ मुख मीठा।।

पावक कह्याँ मूष जे दाझैं, जल कहि त्रिषा बुझाई।

भोजन कह्याँ भूष जे भाजै, तौ सब कोई तिरि जाई।।

नर कै साथि सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै।

जो कबहूँ उड़ि जाइ जंगल में, बहुरि न सुरतै आनै।

साची प्रीति विषै माया सूँ, हरि भगतनि सूँ हासी।

कहैं कबीर प्रेम नहीं उपज्यौ, बाँध्यौ जमपुरि जासी।।

अथवा

ऊधौ अँखियाँ अति अनुरागी।

इकटक मग जोवति अरू रोवतिं, भूलेहुँ पलक न लागी।

बिनु पावस पावस करि राखी, देखत हौ बिदमान।

अब धौं कहा कियौ चाहत हौ, छाँडौ निरगुन ज्ञान।

तुम हौ सखा स्याम सुंदर के, जानत सकल सुभाइ।

जैसे मिलैं सूर के स्वामी, सोई करहु उपाइ।।

(ग) रानी मैं जानी अयानी महा, पबि-पाहनहू तें कठोर हियो है। 9

राजहुँ काजु अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जेहिं कान कियो है।।

ऐसी मनोहर मूरति ए, बिछुरें कैसे प्रीतम लोगु जियो हैं।

आँखिन में सखि! राखिबे जोगु, इन्हैं किमि कै बनबासु दियो है।।

अथवा

फरे आँब अति सघन सोहाए। औ जस फरे अधिक सिर नाए।।

कटहर डार पींड सन पाके। बड़हर, सो अनूप अति ताके।।

खिरनी पाकि खाँड असमीठी। जामुन पाकि भँवर अति दीठी।।

नारियर फरे फरी फरहरी। फुरै जानु इंद्रासन पुरी।।

पुनि महुआ चुअ अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप जस बासू।।

और खजहजा अनबन नाऊँ। देखा सब राउन अमराऊँ।।

लाग सबै जस अमृत साखा। रहै लोभाइ सोइ जो चाखा।।

(घ) हो जी हरि! कित गये नेह लगाय? 9

नेह लगाय मेरो मन हर लीयो, रस भरि टेर सुनाय

मेरे मन में अैसी आवै, मरूं जहर-विस खाय

छांड़ि गये विसवासघात करि, नेह केरी नाव चढाय

मीरां के प्रभु कब र मिलोगे, रहे मधुपुरी छाय

अथवा

या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं।।

रसखानि कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक रौ कल धौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

2. 'ढोला मारू रा दूहा' के पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश के आधार पर मारवणी के विरह का वर्णन कीजिए। 14

अथवा

विद्यापति के काव्य में राधा-कृष्ण के प्रेम का स्वरूप का अपने पाठ्यक्रम में संकलित पदों के आधार पर वर्णन कीजिए।

3. कबीर के काव्य में अंकित विरह को उदाहरण सहित समझाइए। 14

अथवा

'बीसलदेव रास' काव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

4. सूरदास के काव्य में वर्णित गोपियों के विरह की विशेषताएँ बताइए। 14

अथवा

राम-सीता-लक्ष्मण के वन-गमन के मार्मिक दृश्यों का वर्णन पाठ्यक्रम में निर्धारित 'कवितावली' के संकलित अंशों के आधार पर कीजिए।

5. जायसी द्वारा 'सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड' में चित्रित प्रकृति का वर्णन पाठ्यक्रम में निर्धारित अंश के आधार पर कीजिए। 14

अथवा

'मीराँ का काव्य विरह-व्याकुल वेदना का आतुर स्वर है', सिद्ध कीजिए।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए। **2x4=8**

(i) रासो काव्य

(ii) आदिकाल का लौकिक काव्य

(iii) संत मत में सामाजिक चेतना

(iv) संप्रदाय-निरपेक्ष कृष्ण-भक्त कवि

-o0o-